अम्बेडकर कॉलेज में दिशा का सांस्कृतिक कार्यक्रम

बाज़ारू और संवेदनहीन बनाती वर्तमान संस्कृति के ख़िलाफ़ संघर्ष छेड़ते और एक नयी प्रगतिशील संस्कृति का विकल्प खड़ा करने की कोशिश करते हुए **दिशा छात्र संगठन** ने डा. भीम राव अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में एक क्रान्तिकारी सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया जिसमें कई गीतों और एक नाटक का मंचन किया गया।

इस कार्यक्रम को **दिशा** की सांस्कृतिक टोली **विहान** द्वारा प्रस्तुत किया गया। एक क्रांतिकारी गीत से कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए अभिनव ने कहा कि वर्तमान हावी संस्कृति में संवेदनशीलता न के बराबर है और मुनाफे पर टिकी यह सांस्कृति युवाओं को कुण्ठित और मानसिक रुग्ण बना रही है। ऐसे में युवाओं के बीच से एक क्रान्तिकारी विकल्प पेश किये जाने की मुहिम छेड़ने की ज़रूरत है।

अम्बेडकर कॉलेज में क्रान्तिकारी गीत प्रस्तुत करते दिशा के कार्यकर्ता

कार्यक्रम में आगे कई क्रान्तिकारी गीत पेश किये गए जैसे–आ गए यहाँ जवाँ कदम, ऐ इन्सानों ओस न चाटो, लड़ाई जारी है, साथ ही एक भोजपुरी और बांग्ला गीत भी पेश किया गया। टोली के सदस्य अजय ने अपनी बात रखते हुए कहा कि आज जिस तरह आरक्षण के मुद्दे पर समाज को बाँटा जा रहा है या छात्रों को आरक्षण का झुनझुना दिखा कर बरगलाया जा रहा है वह शासक वर्ग की साज़िश है ताकि छात्र-युवा असली मुद्दे–सबको शिक्षा और रोजगार के समान अवसर–पर न सोचकर ऐसे मुद्दे पर अटके रहें जो असल में कोई मुद्दा ही नहीं। टोली के अन्य सदस्य प्रसेन ने साम्प्रदायिक ताकतों द्वारा जनता को बाँटे जाने की साज़िशों को अंग्रेजों की 'बाँटो और राज करो' की नीति का ही अनुसरण बताया जिसे आज की पार्टियाँ अपना रही हैं।

टोली की एक अन्य सदस्य लता ने कहा कि जहाँ सभी आम वर्गों के लोगों को पूँजीवाद के जुए तले पिसना पड़ रहा है वहीं औरतों को पितृसत्ता का अतिरिक्त बोझ अपने कन्धों पर ढोना पड़ रहा है। ऐसे में उन्हें ज्यादा साहसपूर्ण ढंग से इस व्यवस्था के ख़िलाफ उठ खड़े होना होगा। दरअसल, पूँजीवाद और पितृसत्ता एक साथ ही खड़े हैं।

अंत में **'देश को आगे बढ़ाओ'** नामक नाटक पेश किया गया और भगत सिंह के सपनों को पूरा करने के संकल्प के साथ सभा का समापन कर दिया गया।

खालसा कॉलेज (सांध्य) में छात्रों के आन्दोलन की शानदार विजय

शिक्षा के निजीकरण या सीधे शब्दों में कहें कि शिक्षा में मुनाफे की होड़ से जन्मे स्ववित्तपोषित कोर्स सुविधाओं और उन्नत तकनीक के नाम पर किस तरह छात्रों को लूट रहे हैं, अब यह खुले तौर पर देखा जा सकता है। लेकिन साथ ही इस लूट के ख़िलाफ खड़े होते छात्रों के विद्रोह और आन्दोलन इस बात को भी साबित करते हैं कि इंसाफपसन्द नौजवान गलत चीजों को बदलने के लिए हमेशा आगे आए हैं।

ऐसा ही एक उदाहरण पिछले दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय के खालसा (सांध्य) कॉलेज में देखने को मिला। खालसा कॉलेज (सांध्य) उन चन्द कॉलेजों में से एक है जो दिल्ली विश्वविद्यालय में बी.ए.(हिन्दी पत्रकारिता व जनसंचार) का कोर्स चलाते हैं। मगर इस स्ववित्तपोषित कोर्स में हावी अराजकता और अव्यवस्था से सभी छात्र त्रस्त थे। कारण साफ था कि जिन वायदों की बात करके कॉलेज कमेटी ने मोटी रकम ऐंठी थी उन्हें कभी भी पूरा नहीं किया गया था। इस कोर्स में प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को मिलाकर 90 छात्र हैं और प्रत्येक छात्र से क़रीब 13000 रु. वसूले जाते हैं। गौरतलब है कि जब यह कोर्स 4 साल पहले शुरू हुआ था तब इसकी फीस 7710 रु. हुआ करती थी। मगर फीस में हुई 40 फीसदी बढ़ोत्तरी के बावजूद भी छात्रों को न तो कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिया जाता था और न ही उन्हें इण्टर्नशिप पर मीडिया संस्थानों में भेजा जाता था, जिसका वायदा कॉलेज प्रॉस्पेक्टस में किया गया था। ऐसी हालत पिछले चार वर्षों से चली आ रही थी। लेकिन 'दिशा' के नेतृत्व में पीड़ित छात्रों ने अपनी आवाज़ उठाई और अपनी माँगों को लेकर कॉलेज प्रशासन के पास गए। लेकिन इस पर भी प्रशासन ने कोई कारगर कदम नहीं उठाया 'दिशा' ने इस मुद्दे पर व्यापक छात्र समर्थन जुटाने के लिए क्लास-क्लास जाकर हस्ताक्षर अभियान चलाया जिसमें छात्रों का पूरा सहयोग मिला।

इस बार जब 'दिशा' के नेतृत्व में छात्रों का प्रतिनिधि मण्डल प्राचार्य से मिला तो उनकी शिकायतें भी सुनी गईं और वायदों को पूरा करने का आश्वासन भी दिया गया। आखिरकार, छात्रों की एकजुटता रंग लायी और छात्रों के लिए कम्प्यूटर लैब खोल दी गई। साथ ही, सेमिनारों की संख्या में भी इजाफा हुआ

है। इस संघर्ष में 'दिशा' के नेतृत्व में विजय, दानिश, योगेश, वृष्टि, अमन, जिया, और गुफरान ने अधिक पहलकदमी दिखाई। गौरतलब है कि इस अराजकता के खिलाफ संघर्ष के पहले कुछेक छात्रों के बिखरे प्रयास असफल हो चुके थे। ऐसे में इस आन्दोलन की विजय यह साबित करती है कि अभी भी संगठित प्रयास किसी भी प्रशासन को झुका सकते हैं।

नववर्ष के अवसर पर नए संकल्प

31 दिसम्बर 2004 को नववर्ष की पूर्वसंध्या पर करावलनगर, दिल्ली में **नौजवान भारत सभा** और **बच्चा पार्टी** एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कुछ क्रान्तिकारी गीत और दो नाटक पेश किये गए। इस कार्यक्रम में नौभास ने इलाके की समस्याओं की चर्चा करते हुए वहाँ के बाशिन्दों का इस ओर ध्यान खींचा कि वहाँ साफ पानी तक की सुविधा नहीं है। नौभास के संयोजक कपिल ने अपने वक्तव्य में कहा कि साफ पानी, साफ-सफाई हर नागरिक का अधिकार है और इस अधिकार के लिए हमें संघर्ष करना चाहिए। एक अन्य सदस्य अभिनव ने कहा कि इतना वक्त बीत जाने के बाद भी करावल नगर के आधे से अधिक हिस्से में अभी भी पक्की सड़क नहीं है। नौजवान भारत सभा ने इन मुद्दों को लेकर संघर्ष करने का संकल्प लिया और जनसमुदाय ने इसमें भागीदारी का आश्वासन दिया।

नौजवान भारत सभा द्वारा आयोजित मेडिकल कैम्प में अपनी जाँच कराते मजदूर

इसके पहले **बच्चा पार्टी** के बच्चों ने 'गिरगिट' नामक नाटक और साम्प्रदायिक सद्भाव से सम्बन्धित कुछ गीत गाए। **नौजवान भारत सभा** के सदस्यों ने सफदर हाशमी के नाटक 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं' का मंचन किया और कुछ क्रान्तिकारी गीतों की प्रस्तुति की।

नौजवान भारत सभा द्वारा मजदूरों के लिए निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

नौजवान भारत सभा 19 से 21 नवम्बर 2004 को प्रकाश विहार करावलनगर की मजदूर बस्ती में मजदूरों के लिए एक निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में लोगों की डाक्टरी जाँच हुई और निःशुल्क दवाएँ भी दी गईं। तीन दिनों के दौरान शिविर में करीब 1800 मजदूरों की जाँच हुई और दवा दी गई। इनमें से अधिकांश गन्दे पानी की वजह से पेट की बीमारियों के शिकार थे।

शिविर के आखिरी दिन कार्यक्रम स्थल पर लगी भीड़ एक जनसभा में तब्दील हो गई। **नौजवान भारत सभा** के प्रसेन ने सभा में उपस्थित मजदूरों और उनके परिजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैसे तो चिकित्सा सरकार द्वारा दी जाने वाली निःशुल्क सुविधा होनी चाहिए, मगर ऐसा न होने की सूरत में हम इस तरह के शिविर का आयोजन कर रहे हैं। मगर यह समस्या का समाधान नहीं है। हमें इस बात को समझना चाहिए कि इस अधिकार के लिए दृढ़ संघर्ष करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं।

दिल्ली विश्वविद्यालय में सचल पुस्तक प्रदर्शनी

गोरखपुर, लखनऊ, उत्तरांचल, पंजाब, हरियाणा के दौरे के बाद 23 जनवरी को **जनचेतना सचल पुस्तक प्रदर्शनी** की वैन दिल्ली विश्वविद्यालय पहुँची। यह रिपोर्ट लिखे जाने तक वह विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर मे ही थी। यह वैन पूरे देश में प्रगतिशील, स्वस्थ और विश्व-प्रसिद्ध साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए लगातार देश के विभिन्न हिस्सों में घूम रही है। दिल्ली विश्वविद्यालय में वैन के साथ **दिशा** के कार्यकर्ताओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये। छात्रों ने वैन पर मौजूद पुस्तकों में काफी दिलचस्पी दिखायी और इस मुहिम की काफी प्रशंसा की। प्रदर्शनी में गोर्की, प्रेमचंद, जैक लण्डन, चेखव, अप्टन सिंक्लेयर सरीखे साहित्यकारों की रचनाओं के अलावा भगत सिंह और उनके साथियों का परिवर्तनकामी साहित्य भी मौजूद था।

नेपाल में राजा का आत्मघाती कदम

(पेज 48 से जारी)

तेजी के साथ छात्रों-युवाओं और मध्यवर्ग की आबादी के बीच उनका बचा-खुचा जनाधार माओवादियों के पाले में खिसकता जा रहा है। उन्हें इसका डर सता रहा है कि मोर्चा बनने का अधिकतम लाभ माओवादी ही उठा ले जायेंगे और उनकी जमीन पूरी तरह खिसक जायेगी।

बहरहाल, नेपाल नरेश ने आपातकाल की घोषणा कर न केवल आत्मघाती कदम उठा लिया है वरन इससे पहलकदमी पूरी तरह माओवादियों के हाथ में आ गयी है। बदहवासी में ऐसी गलतियां दुनिया के सभी जालिम हुक्मरान किया करते हैं। नेपाली जनता के क्रान्तिकारी जनसंघर्षों पर दमन का नया दौर शुरू हुआ है। इसका मुकाबला करते हुए माओवादियों के नेतृत्व में नेपाली जनता पुरानी सड़ी-गली सत्ता को उखाड़ फेंककर नयी जनसत्ता कायम करने में कामयाब होगी या नहीं इसका जवाब भविष्य में मिलेगा। लेकिन, इतना तय है कि संघर्ष जिस ऊँचाई तक पहुँच चुका है और जिस गहराई तक जड़ें जमा चुका है उसे देखते हुए उसे पूरी तरह नेस्तनाबूद करना सम्भव नहीं।